शताब्दी की साहित्यिक मासिक पत्रिका—'सरस्वती'

डॉ० भवानीलाल भारतीय

विगत शताब्दी के अन्तिम वर्ष १९०० में हिन्दी साहित्य-संसार में दो उल्लेखनीय घटनाएं हुईं प्रथम —छायावादी काव्य के शीर्ष हस्ताक्षर महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त का अल्मोड़ा जिले के कौसानी गांव में जन्म और दूसरी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा मासिक पत्र 'सरस्वती' का प्रकाशन। यदि आप कभी इलाहाबाद जायें तो एक चौराहे पर हिन्दी के आधुनिक गद्य को स्वरूप देने वाले आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की पाषाण प्रतिमा को देखेंगे। यह प्रतिमा इण्डियन प्रेस के अहाते के समीप लगी है। यह वही इण्डियन प्रेस है, जिसकी स्थापना एक बंगाली कायस्थ बाबू चिन्तामणि घोष ने मात्र पांच सौ रुपयों की स्वल्प पूंजी लगा कर १८८४ में की थी। आगे चल कर यही इण्डियन प्रेस हिन्दी का सबसे बड़ा तथा प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान बना। इसी प्रेस से कालान्तर में 'सरस्वती', बालोपयोगी मासिक 'बाल सखा', साप्ताहिक 'देशदूत', कहानी पत्रिका 'मंजरी' तथा कृषि एवं ग्रामीण समस्याओं से सम्बन्धित 'हल' नामक पत्र प्रकाशित होते रहे। सच तो यह है कि हिन्दी ग्रन्थों तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए उन दिनों का संयुक्त प्रान्त (आज का उत्तर प्रदेश) ही एक मात्र उर्वर प्रदेश था। यहां के इलाहाबाद, लखनऊ तथा बनारस आदि शहरों से ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होते थे।

जिस संस्था ने सरस्वती को जन्म दिया, उस नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना १८९३ में बाबू श्यामसुन्दर दास (आगे चल कर राय बहादुर, डी० लिट० तथा साहित्य वाचस्पति), ठाकुर शिव कुमार सिंह तथा पं० रामनारायण मिश्र ने सम्मिलित रूप से की थी। हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज में सभा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है) सात वर्ष बाद जब इस सभा ने एक सुन्दर साहित्यिक मासिक निकालने का विचार किया तो उसके लिए एक सम्पादक मण्डल का गठन हुआ। इसके सदस्य थे—सर्वश्री श्यामसुन्दर दास, कार्तिक प्रसाद खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर (उद्धव शतक के कवि) तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई बाबू राधाकृष्ण दास। इस पत्रिका ध्येय वाक्य संस्कृत की यह सूक्ति थी—

सरस्वती श्रुति महती महीयताम्।

पत्रिका के प्रकाशन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा गया था—हिन्दी रसिकों के मनोरंजन के साथ-साथ सरस्वती भण्डार की अंग पुष्टि, वृद्धि तथा पूर्ति। इसके प्रथम अंक में उन विषयों का उल्लेख किया गया था जिनका समावेश इस पत्रिका में किया जाना था, ये थे—गद्य, पद्य, काव्य, नाटक, उपन्यास, चम्पू, इतिहास, जीवनचरित, पत्र, हास्य, परिहास, कौतुक, पुरावृत्त, विज्ञान, शिल्प, कला कौशल आदि। नवप्रकाशित ग्रन्थों की समालोचना प्रकाशित किये जाने का भी उल्लेख था और यह कहा गया था कि पत्रिका अपने ढंग की अद्वितीय होगी। वस्तुतः हिन्दी साहित्य के सर्वांगीण उत्थान के लिए ही सरस्वती का जन्म हुआ था। इसके प्रथम अंक में निम्न सामग्री प्रकाशित हुई—बाबू राधाकृष्ण दास का भारतेन्दु पर लेख, पं० किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा किया गया शेक्सपियर के नाटक सिम्बेलिन का भाषानुवाद, कार्तिक प्रसाद खत्री का लेख—प्रकृति की विचित्रता और काश्मीर यात्रा, बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित आलोक चित्रण अर्थात् फोटोग्राफी। इस प्रकार सम्पादक मण्डल ने ही सरस्वती के प्रथम अंक के कलेवर को सजाया था तथा इसमें जीवन चरित, नाटक पर आधारित

कहानी, यात्रा वर्णन, प्रकृति चित्रण तथा विज्ञान आदि विविध प्रकार की सामग्री का समावेश किया था। आचार्य कोटि के बाबू श्यामसुन्दर दास का फोटोग्राफी पर लिखना कम आश्चर्यजनक नहीं था।

सात वर्ष तक सरस्वती का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में होता रहा। इसके पश्चात् सभा ने इसके प्रकाशन का अधिकार इण्डियन प्रेस को दे दिया और तब आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके वैतनिक सम्पादक बनाये गये। इससे पहले आचार्य द्विवेदी बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे में चीफ सिगनैलर के पद पर नियुक्त थे और उन्हें अच्छा वेतन मिलता था। किन्तु एक अंग्रेज अफसर के दुर्व्यवहार से खिन्न होकर उन्होंने पुरानी नौकरी को अलविदा कहा और मात्र बीस रुपये मासिक पर सरस्वती का सम्पादन स्वीकार कर लिया। सरस्वती के इस पद पर आचार्य द्विवेदी १९०३ से १९१८ तक, लगातार पन्द्रह वर्षों तक रहे। इस अवधि में उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की जो सेवा की है, वह इतिहास का एक अध्याय बन गई है। कवियों, कहानीकारों और गद्य लेखकों की रचनाओं का परिष्कार कर उन्हें नया रूप दे देना आचार्य द्विवेदी के ही वश का काम था। ऐसा कौन सा लेखक या कवि था, जिसकी साहित्य यात्रा 'सरस्वती' से आरम्भ न हुई हो। कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, गुरु भक्त सिंह, ठाकुर गोपालशरण सिंह आदि की काव्य कृतियां 'सरस्वती' के माध्यम से ही पाठकों के समक्ष आईं। सुमित्रानन्दन पन्त और निराला के छायावादी काव्य को भी 'सरस्वती' ने प्रकाशित किया। प्रेमचन्द, सुदर्शन और कौशिक—हिन्दी कथा लेखकों की बृहत् त्रयी की रचनाएं सरस्वती द्वारा पाठकों तक पहुंची। इलाचन्द्र जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास (निर्वासित) तथा राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वर्णनों को जनसाधारण तक 'सरस्वती' ने पहुंचाया। मौलिक लेखों के अतिरिक्त अन्य प्रान्तीय तथा विदेशी भाषाओं की उपयोगी रचनाओं को भी इस पत्रिका में स्थान मिलता रहा।

'सरस्वती' का पौन सदी का इतिहास हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रगति और विकास का इतिहास है। जिस समय द्विवेदी जी ने इसका सम्पादन भार सम्भाला, उस समय उन्होंने चार प्रतिज्ञाएं कीं जिन्हें वे पूरे पन्द्रह वर्ष के अपने कार्यकाल में निभाते रहे। ये थीं—१. वक्त की पाबन्दी अर्थात् पत्रिका समय पर निकलेगी। २. मालिकों का विश्वासपात्र बनने की चेष्टा करूंगा। ३. अपने हानि-लाभ की चिन्ता न कर पाठकों के हानि लाभ का ध्यान रखूंगा और अन्तिम, न्याय पथ से कभी विचलित नहीं होऊंगा। भर्तृहरि का वाक्य 'न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' मेरा आदर्श वाक्य रहेगा। इन चारों प्रतिज्ञाओं को आचार्य द्विवेदी ने अपने कार्यकाल में किस प्रकार निभाया, इसका रोचक वृत्तान्त उनके मुंह से ही सुनिए— "सम्पादक जी बीमार हो गये, इस कारण 'स्वर्ण समाचार' दो हफ्ते बन्द रहा। मैनेजर महोदय के मामा परलोक प्रस्थान कर गये, लाचार 'विश्वमोहिनी' पत्रिका देर से निकल रही है, 'प्रलयंकरी पत्रिका' के विधाता का फाउण्टेन पेन टूट गया, उसके मातम में तेरह दिन तक काम बन्द रहा। प्रेस की मशीन नाराज हो गई, क्या किया जाय, 'त्रिलोकमित्र' का यह अंक इसी कारण समय पर नहीं छप सका" इस तरह की घोषणाएं मेरी दृष्टि में बहुत पढ़ चुकी थीं। मैंने कहा—मैं इन बातों का कायल नहीं। प्रेस की मशीन टूट जाये तो उसका जिम्मेदार मैं नहीं। पर पत्रिका समय पर न पहुंचे तो इसका जिम्मेदार मैं हूँ। चाहे पूरा अंक ही मुझे क्यों न लिखना पड़े पर पत्रिका की प्रेस कापी समय पर भेजना मेरी जिम्मेदारी है। मेरे पन्द्रह-सोलह वर्ष के दीर्घकाल में एक बार भी 'सरस्वती' का प्रकाशन बन्द नहीं हुआ।" अवशिष्ट तीन प्रतिज्ञाओं का निर्वाह भी उन्होंने पूर्ण तत्परता से किया।

द्विवेदी काल की 'सरस्वती' की फाइलों का अध्ययन कर पी० एच० डी० की उपाधि पा लेना कठिन नहीं था। डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित की डी० लिट० की थीसिस 'आधुनिक काव्य धारा'

की आधारभूत सामग्री सरस्वती की इन्हीं संचिकाओं से संचित की गई थी। 'सरस्वती' में छपने के लिए भेजी जाने वाली रचनाओं की भाषा तथा व्याकरण-गत त्रुटियों को खुद द्विवेदी जी सुधारते। कभी-कभी तो यह सुधार और परिष्कार इतना अधिक हो जाता कि मूल कृति का कलेवर ही बदल जाता। लेखक की भाषा तथा शब्द चयन सरल एवं बोधगम्य हो, उसमें स्वाभाविकता तथा एकरूपता रहे, यह द्विवेदी जी का प्रधान लक्ष्य रहा। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं—"यह न देखना कि यह शब्द अरबी का है, या फारसी का या तुर्की का। देखना सिर्फ यह है कि इस शब्द, वाक्य या लेख का आशय अधिकांश पाठक समझ लेंगे या नहीं।" भाषा परिष्कार तथा शब्दों को व्याकरण सम्मत रूप देने के कारण द्विवेदी जी को कभी-कभी वाद-विवाद के घेरे में भी उल-झना पड़ता था। एक बार जब उन्होंने सरस्वती में 'अनस्थिरता' को साधु (निर्दोष) शब्द मान लिया तो भारतमित्र के सम्पादक बालमुकुन्द गुप्त से उन्हें शास्त्रार्थ सा करना पड़ा। अपने पक्ष की सिद्धि में जब उन्होंने 'आत्माराम' (जो प्राय: तोते के लिए प्रयुक्त होता है) के प्रच्छन्न नाम से लिखा तो गुप्त जी ने 'आत्माराम की टें टें' लिख कर उसका तुर्की ब तुर्की जवाब दिया। ऐसे वाद विवादों से गद्य में निखार आया और शब्दों के रूप स्थिर हुए।

'सरस्वती' में अन्य भाषाओं के पत्रों में प्रकाशित स्तरीय लेखों का अनुवाद प्रकाशित होता था। इसका उद्देश्य यह था कि जहां जो कुछ उपयोगी और पठनीय है, उसे हिन्दी पाठकों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। सरस्वती में ऐसे लेख प्राय: द्विवेदी जी खुद लिखते थे। हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त बंगला, मराठी, गुजराती और उर्दू का ज्ञान होने के कारण इन भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं को सरस्वती में स्थान देना उनके लिए सुगम था। उनके ऐसे ही लेखों के संग्रह कालान्तर में 'सुकवि संकीर्तन', 'अद्भुत आलाप', 'रसज्ञ रंजन' तथा 'साहित्य सीकर' जैसे शीर्षकों से पुस्तकाकार छपे।

आचार्य द्विवेदी के सरस्वती के सम्पादक पद से अवकाश ले लेने पर मध्य प्रदेश निवासी, पुरानी पीढ़ी के समीक्षक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को इस पद पर रखा गया। बख्शी जी के सम्पादन-काल में भी 'सरस्वती' ने अपना स्तर कायम रखा। 'सरस्वती' सचित्र पत्रिका थी। आरम्भ के वर्षों में पत्रिका के भीतर के मुख पृष्ठ पर केरल के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा के चित्र प्रकाशित होते थे। इन चित्रों का पद्यात्मक परिचय देने का काम द्विवेदी जी ने उस समय के प्रसिद्ध कवि पं० नाथूराम शंकर शर्मा को सौंप दिया था। शंकर जी अपनी काव्य प्रतिभा से विषयानुकूल पद्य लिखते और वही चित्र के नीचे छपता। जब 'सरस्वती' में मृच्छकटिक की नायिका वसन्तसेना का चित्र छपा, तो नीचे शंकर जी की इस घनाक्षरी को द्विवेदी जी ने स्थान दिया—

कज्जल के कूट पर दीप शिखा सोती है कि
श्याम घनमण्डल में दामिनी की धारा है।
यामिनी के अंक में कलाधर की कोर है कि
राहू के कबंध पर कराल केतु तारा है।
शंकर कसौटी पै कंचन की लीक है कि
तेज ने तिमिर के हिए में तीर मारा है।
काली पाटियों के बीच मोहिनी की मांग है कि
सीस पै खांडा कामदेव का दुधारा है।

चित्र परिचय के इन पद्यों ने भी खड़ी बोली कविता का इतिहास बनाया था। बख्शी जी के कार्य निवृत्त होने पर इस पत्रिका का सम्पादन पं० देवीदत्त शुक्ल, ठाकुर श्रीनाथ सिंह तथा उमेशचन्द्र देव ने सम्भाला। पं० देनीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' तथा उमेशचन्द्र मिश्र भी सम्पादक रहे।

सरस्वती की हीरक जयन्ती १९६३ में राष्ट्र-कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त की अध्यक्षता में मनाई गई। इस अवसर पर पत्रिका का हीरक जयन्ती विशेषांक प्रकाशित हुआ जिसकी प्रथम प्रति तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद को भेंट की गई। इसी अवसर पर इण्डियन प्रेस परिसर के आगे आचार्य द्विवेदी की प्रतिमा का अनावरण भी गुप्त जी ने किया। सरस्वती की फाइलों में हिन्दी भाषा और साहित्य

का इतिहास समाया है। डा० श्यामसुन्दरदास की आत्मकथा तथा आचार्य द्विवेदी का पत्रव्यवहार इसमें छपता रहा। इस शताब्दी के सातवें दशक तक आते-आते 'सरस्वती' भी शायद वार्धक्य की सीमा में पहुंच गई और इण्डियन प्रेस से प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका पाठकों से रूठ गई—इसका प्रकाशन बन्द हो गया। उस समय पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी इसके सम्पादक थे। अपनी आयु के लगभग पचहत्तर वर्ष पूरे कर साहित्य की यह 'सरस्वती' पुण्यतोया सरस्वती की भांति धराधाम से लुप्त हो गई।

—८/४२३, नन्दन वन, जोधपुर ○